Govt. Girls College Sehore (M.P.)

REPORT OF NATIONAL SEMINAR

On

"Environmental Degradation : Causes & Remedies"

On

25th February 2019

Sponsored by

Janbhagidari Samiti

Organised By

Department of Botany and IQAC

Convenor
Dr. Rajesh Bakoriya
HOD Botany

Chief patron
Dr. Suman Taneja
Principal

राष्ट्रीय संगोष्ठी
पर्यावरणीय क्षरण : कारण एवं समाधान

दिनांक :– 25 फरवरी 2019

कार्यक्रम रूपरेखा

08:30 से 10:30 बजे तक	:–	पंजीयन
10:30 से 11:30 बजे तक	:–	उद्घाटन सत्र
11:30 से 11:45 बजे तक	:–	स्वल्पाहार एवं चाय
11:45 से 01:45 बजे तक	:–	प्रथम तकनीकी सत्र
01:45 से 02:30 बजे तक	:–	भोजन अंतराल अवकाश
02:30 से 04:30 बजे तक	:–	द्वितीय तकनीकी सत्र
04:30 से 05:00 बजे तक	:–	समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण

//प्रतिवेदन//

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
''पर्यावरणीय क्षरण : कारण एवं समाधान''

शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर में दिनांक 25 फरवरी 2019 को वनस्पतिशास्त्र विभाग एवं आई.क्यू.ए.सी. के द्वारा जनभागीदारी समिति के सौजन्य से एक दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का विषय ''पर्यावरणीय क्षरण : कारण एवं समाधान'' था।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र सेवनिया के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. जेनेन्द्र कुमार कन्नोजिया अध्यक्ष के रूप, में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमन तनेजा विशिष्ठ अतिथि के रूप में, डॉ. माधुरी मोडक (सेवानिवृत्त प्राध्यापक), डॉ. आशा गुप्ता प्राचार्य चन्द्रशेखर आजाद अग्रणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीहोर एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. बी. सी.जैन उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजा एवं वंदना के साथ किया गया। सभी अतिथियों ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर द्वीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर कु. प्रवीण चतुर्वेदी द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का संचालन आई. क्यू.ए.सी. संयोजक डॉ. जया शर्मा द्वारा किया गया।

स्वागतः– सभी अतिथियों को पुष्प गुच्छ एवं किट प्रदान कर स्वागत किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. जेनेन्द्र कुमार कन्नोजिया का स्वागत महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमन तनेजा द्वारा किया गया। विशिष्ठ अतिथि डॉ. माधुरी मोडक का स्वागत डॉ. जया शर्मा संयोजक आई.क्यू.ए.सी. द्वारा किया गया। अग्रणी महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. आशा गुप्ता का स्वागत महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. सुधा लाहोटी ने पुष्प गुच्छ भेंट कर किया। डॉ. बी.सी.जैन पूर्व प्राचार्य शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर का स्वागत कार्यालय प्रमुख मुख्य लिपिक श्री विनोद शर्मा जी के द्वारा किया गया। महाराष्ट्र से पधारे विषय विशेषज्ञ डॉ. राजकुमार पावले का स्वागत डॉ. अनुप कुमार सिंह ने किया। डॉ. टेसी थॉमस प्राध्यापक पी.जी.कॉलेज गुना का स्वागत सेमीनार के संयोजक डॉ. राजेश बकोरिया द्वारा किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष डॉ. सुमन तनेजा का स्वागत महाविद्यालय की प्राध्यापक डॉ. मंजरी अग्निहोत्री द्वारा किया गया।

अतिथियों के स्वागत वक्तव्य में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. सुमन तनेजा द्वारा मुख्य अतिथि डॉ. कन्नोजिया सहित सभी अतिथियों एवं शोधार्थियों द्वारा किया गया। प्राचार्य महोदय ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि शासकीय कन्या महाविद्यालय सीहोर जिले का एकमात्र महाविद्यालय है। जिसमें विभिन्न संकायो में कई विषय का अध्यापन कराया जाता है। महाविद्यालय कई शैक्षणिक सांस्कृतिक एवं खेलकूद गतिविधियों में कीर्तिमान स्थापित कर चुका है एवं निरंतर प्रगति के पद पर अग्रसर है। वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरणीय क्षरण एक मुख्य समस्या है। सेमीनार में उपस्थित समस्त शोधार्थी एवं विद्‌वानों द्वारा प्रस्तुत शोध पत्रों से जो सार निकलकर आयेगा उसका मंथन कर सही निष्कर्ष निकालना ही इस संगोष्ठी का उद्‌देश्य है।

संगोष्ठी का लक्ष्यः– संगोष्ठी के सहयोजक डॉ. राजेश बकोरिया ने इस एकदिवसीय संगोष्ठी का लक्ष्य एवं उद्देश्य प्रस्तुत किया साथ ही आयोजन की रूपरेखा के बारे में जानकारी दी। उन्होने विषय की महत्ता पर प्रकाश डाला साथ ही पर्यावरण प्रदूषण के साथ–साथ समाज में बढ़ रहे मानसिक प्रदूषण पर भी चिंता व्यक्त की।

आपने अपने वक्तव्य में बताया कि पर्यावरण शब्द परि+आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ ''हमारे चारों ओर का आवरण'' होता है। मानव जाति के उद्भव लगभग चार अरव वर्ष पूर्व माना जाता है जब मानव ने प्रारंभ में अपनी आखें खोंली थीं तब हरे–भरे जंगल, झर–झर बहते झरने कल–कल करती नदियां, विशुद्ध प्राणवायु उसे प्राप्त होती थी। जैसे–जैसे मनुष्य ने विकास यात्रा प्रारंभ की औद्योगिक एवं तकनीकी विकास का सूत्रपात हुआ तब प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दौहन होनें लगा और पर्यावरण में परिवर्तन आने लगा। वर्तमान समय में भारत ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व पर्यावरणीय ह्मस की स्थिति की भयावहता से आक्रांत है विकास की अंधाधुंध दौड़ में पर्यावरणीय ह्मस तीव्रगति से हो रहा है इसके मुख्य कारणों में वनों का लगातार विनाश, बढता हुआ औधोगिकी करण, यातायात के साधनों की बढती संख्या, कृषि उत्पादन में बढती हुई होड़–रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग, सीमेंटेड सड़को का बडता हुआ जाल, जनसंख्या वृद्वि एवं ग्रीनहाउस प्रभाव आदि हैं। प्राकृतिक संपदाऐं दिन–प्रतिदिन क्षीण हो रही है जिससे भूस्खलन एवं भूकंप, बाढ़, अकाल जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं तथा पर्यावरणीय ह्मस जैसी समस्याओ को जन्म देती हैं। यदि मानव को इन समस्याओं से निजात चाहिए तो पर्यावरण के साथ सामंजस्य बैठाकर संतुलित रूप से विकास करना होगा जिससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहे और मानव भी सुख सुविधा युक्त जीवन यापन कर सकें। पर्यावरण की सुरक्षा हेतु कुछ प्रमुख उपायों में हमें वृक्षों की कटाईं पर रोक लगाकर, अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे। बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण पाना होगा, कृषि में जैविक

खादों के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा, औधोगिक विकास में सुनियोजित तरीको वायु एवं जल को प्रदूषित होनें से बचाने के उपाय खोजने होंगें, जल संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगें जैसे वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को बढ़ावा देना, अपशिष्ट पदार्थो का निपटारा उचित तरीकों से करना, प्लास्टिक एवं पौलीथीन आदि का भी पुनःचक्रीकरण करना आवश्यक हैं। समाज में प्रदूषण के प्रति जनजागृति लाना और नवीकरणीय उर्जा स्रोत्रों के उपयोग को बढ़ावा देना होगा।

तभी हम इस खूबसूरत दुनिया को बचाने में समर्थ होंगें वरना वह दिन दूर नही जब हम काल के गर्त में समा जाऐंगें। संयोजक द्वारा आशा जताई गई की सेमीनार में पधारे विषय विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों द्वारा चर्चा कर पर्यावरणीय क्षरण जैसी समस्या से बचने के लिए आज बेहतर सुझाव प्राप्त होंगे। उन्होने सेमीनार में विशेष रूप से सहयोग करने वाले महाविद्यालयीन स्टॉफ एवं प्रतिभागियों को विशिष्ठ रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया।

महाविद्यालय की वरिष्ठ प्राध्यापक एवं प्राणी शास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतिमा खरे ने पर्यावरणीय क्षरण के विषय में विस्तार से बताया एवं इसके प्रति सजग रहकर कई वैज्ञानिक और कानूनी उपाय अपनाने होंगे तथा धर्म संस्कृति एवं हवन आदि के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण पर जोर दिया। और यूज एण्ड थ्रो की संस्कृति पर रोक लगाने की अपील की।

अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों के उद्‌बोधन :–

कार्यक्रम की विशिष्ठ अतिथि एवं सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. माधुरी मोडक ने कहा कि प्रकृति के बिना हमारा जीवन हमारा जीवन असंभव है। आज हम औद्योगिकीकरण एवं जनसंख्या वृद्धि ने पर्यावरणीय असंतुलन को जन्म दिया है। जीव और पर्यावरण में गहरा अंत संबंध है। जीव पर्यावरण में जन्मता है पर्यावरण में अपना जीवनयापन करता है और अंततः पर्यावरण में ही विलीन हो जाता है। प्रत्येक जीव का अपना एक पर्यावरण होता है। मानव जो कि सृष्टि में ईश्वर की अप्रतिम कृति है उसे दृष्टिगत रखते हुए पर्यावरण शब्द के अर्थ बहुत व्यापक है। मानव की दृष्टि से भौगोलिक स्थिति के साथ–साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, भौतिक, समग्र, परिवेश को भी हम पर्यावरण की परिधि में सम्मिलित करते है। यदि पर्यावरण के इस व्यापक अर्थ को न लेकर केवल भौगोलिक संदर्भ को ही ग्रहण करें तो हम देखेंगे कि उसके चारों और व्याप्त वायु जल और थल से वह निरंतर प्रभावित भी होता है और स्वयं भी उसे प्रभावित करता है।

व्याख्यान देते हुए : डॉ. माधुरी मोडक सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष वनस्पतिशास्त्र

दूसरे विशेष अतिथि के रूप में डॉ. आशा गुप्ता प्राचार्य चन्द्रशेखर आजाद अग्रणी महाविद्यालय सीहोर की प्राचार्य डॉ. आशा गुप्ता ने विषय को ज्वलंत बताते हुए कहा कि पर्यावरण क्षरण के कारण विभिन्न जीवों की प्रजातियां विलुप्त हो रही है। गोरैया की संख्या में कमीं होने का भी यही कारण है। नवीन वैज्ञानिक अनुसंधानों प्रचुर औद्यौगिक उत्पोदनों निरंतर बढ़ते वाहनों ने परिदृश्य को परिवर्तित कर गतिविधियों से पर्यावरण पूर्णतः असंतुलित हो गया है। मानव और पर्यावरण के सहसम्बंध के दोनों स्वरूप है नकारात्मक और सकारात्मक। मानवीय गतिविधियॉ पर्यावरण प्रदूषित करने के लिये निसंदेह उत्तरदायी है, लेकिन ''पर्यावरण क्रांति के इस दौर में वह पर्यावरण के प्रति जागृत होते हुए प्रदूषण को रोकने के लिये निरंतर नवीन से नवीनतम उपायों को अन्वेषित करके अपनाने की ओर अग्रसर भी है। आज ओजोन परत यानि कि पृथ्वी का ''रक्षा कवच'' इसका क्षरण हो रहा है। इससे जलवायु पर जो प्रभाव पड़ता है। उसके कारण मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमीं, शीघ्र बुढ़ापा, त्वचा केंसर का खतरा एवं श्वसन तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः इसके प्रति सजग होकर कई वैज्ञानिक और कानूनी उपाय अपनाये जा रहे है।

व्याख्यान देते हुए : डॉ. आशा गुप्ता प्राचार्य चन्द्रशेखर आजाद अग्रणी महाविद्यालय सीहोर

तीसरे विशिष्ठ अतिथि के रूप में सेवानिवृत्त प्राचार्य डॉ. बी.सी.जैन ने लघु कहानियों के माध्यम से पर्यावरण के महत्व को बताते हुए पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी को नागरिकों का कर्तव्य बताया।

व्याख्यान देते हुए : डॉ. बी.सी.जैन पूर्व एवं सेवानिवृत्त प्राचार्य

मुख्य अतिथि के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र सेवनियां के वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. जेनेन्द्र कुमार कन्नोजिया ने कृषि की विभिन्न तकनीको के बारे में विस्तार से बताया उन्होने रासायनिक उर्वरको से होने वाली हानि एवं दुषप्रभाव पर भी चर्चा की। आपने बताया कि आपके द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र सेवनिया को बनाया गया। इस केन्द्र में विभिन्न ग्रामीण युवाओं को कृषि की विभिन्न तकनीकों एवं जैविक कृषि के बारे में प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे वह अपनी फसलों के उत्पादनों को बढ़ा सकते है। साथ ही वर्मी कम्पोस्टिंग के बारे में भी आपके द्वारा विस्तार से चर्चा की गई। आपने ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव, रूफ वॉटर हार्बेटिंग एवं पर्यावरण ह्रास की विभिन्न परेशानियों से अवगत कराया गया। आपने अपील की कि बच्चे वर्मी कम्पोस्टिंग के उपयोग को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दें एवं पर्यावरण संरक्षण के लिये रेली, नुक्कड़ नाटक आदि के माध्यम से अपने आस–पास के लोगों को जागरूक करें।

व्याख्यान देते हुए : मुख्य अतिथि एवं वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक डॉ. जैनेन्द्र कुमार कन्नोजिया

प्रथम तकनीकि सत्र

अध्यक्ष :– प्राचार्य, डॉ. सुमन तनेजा

विषय विशेषज्ञ :– डॉ. टेसी थामस प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय गुना

विषय विशेषज्ञ :– डॉ. राजकुमार पावले प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान इन्द्रा गांधी कॉलेज सिडको नांदेड़ महाराष्ट्र (स्रोत वक्ता)

स्रोत वक्ता डॉ. राजकुमार पावले प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान इन्द्रा गांधी कॉलेज सिडको नांदेड़ महाराष्ट्र ने पर्यावरणीय ह्रास की परिभाषा उसके विभिन्न कारणों एवं प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की। आपने पर्यावरण ऑडिट को भी विस्तृत रूप से समझाया एवं हर संस्था द्वारा पर्यावरण ऑडिट को कराने पर जोर दिया। आपने ई–वेस्ट के दुषप्रभावों को भी समझाया आपने बताया कि 2021 में यह ई–वेस्ट 5.52 टन पहुंचने का अनुमान है ओर भारत में करीब 20 लाख टन प्रति वर्ष ई–वेस्ट पैदा होता है। इन्होने स्वास्थ्य एवं पर्यावरण ह्रास के जोखिम को कम करने की अपील की एवं युवाओं को पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने पर भी जोर दिया।

व्याख्यान देते हुए : स्रोत वक्ता डॉ. राजकुमार पावले प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान इन्द्रा गांधी कॉलेज सिडको नांदेड़ महाराष्ट्र

प्रथम तकनीकि सत्र के दूसरे विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ. टेसी थॉमस प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय गुना द्वारा प्लास्टिक के उपर विस्तार से बताया गया। आपने बताया कि आजकल हमारी निर्भरता प्लास्टिक पर आवश्यकता से अधिक हो गई है। आपने लघु फिल्म के माध्यम से प्लास्टिक के दुष्प्रभावों पर विस्तार से प्रभाव डाला। एवं सभी से प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करने की अपील की।

<u>व्याख्यान देते हुए : डॉ. टेसी थॉमस प्राध्यापक शासकीय महाविद्यालय गुना</u>

द्वितीय तकनीकि सत्र
पेपर प्रेजेन्ट करते हुये प्रतिभागी

शासकीय कन्या
महाविद्यालय
सीहोर

द्वितीय तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में चन्द्रशेखर आजाद स्नाकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री बी.एल.बकोरिया ने आज से 20 साल पहले के सीहोर एवं वर्तमान सीहोर की तुलना करते हुये दोनो में अंतर बताया आपने बताया की पहले किस तरह गॉव में खेती की जाती थी। ज्वार के पौधो पर तोतो को किस तरह भगाया जाता था। किस तरह घर– घर गोबर की खाद बनाई जाती थी और उससे खेती की जाती थी। आज आधुनिकता की दौड़ में ओर फसल उत्पादन बढाने के लिये रासानिक उर्वरको का प्रयोग किया जा रहा है। ज्वार,कपास और तुअर का स्थान सोयाबीन ने ले लिया है। इस तरह लगातार पर्यावरणीय क्षरण देखने को मिल रहा है।

द्वितीय तकनीकी सत्र के विषय विशेषज्ञ के रूप में शासकीय गीतांजली स्वशासीय कन्या महाविद्यालय भोपाल की प्राध्यापक डॉ. दिवा मिश्रा ने बताया की किस तरह शहरी क्षेत्रो में उन्नत प्रौद्योगिकी ने जीवन को आराम दायक बनाया। परन्तु ऐसे वातावरण का निर्माण भी कर दिया। जिसने पर्यावरण क्षरण को बढावा दिया है। क्रांकीटो के बढते मकान सड़ाके जाल मल्टीस्टोरी बिल्डिंगस् वाहनो की बढती संख्या एवं घटते हुये पेडो की संख्या आदि ने लगातार कार्वन उत्सर्जन एवं सी.एफ.सी. के उत्पादन में बढोतरी की है।

अत्यधिक गर्मी, अत्यधिक सर्दी कम वर्षा या अधिक वर्षा ने मानव जीवन ने उथल पुथल मचा दी है। घरो, बाजारो मॉल एवं कार्यालयो में एसी.फ्रिज लगे हुये जिनने पर्यावरणीय संतुलन को हिला कर रख दिया हैं। आपने कई छोटी –छोटी लघु फिल्मो के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। एवं इस तरह के सेमीनार को आयोजित करने हेतु महाविद्यालय को बधाई दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुये आई.क्यू.एस.सी. संयोजक डॉ.जया शर्मा

आभार व्यक्त करते हुये प्राध्यापक डॉ. जी.एल.जैन

प्रमाण–पत्र प्राप्त करते हुये प्रतिभागी

शासकीय कन्या
महाविद्यालय
सीहोर

शासकीय कन्या
महाविद्यालय
सीहोर

शासकीय कन्या
महाविद्यालय
सीहोर

शासकीय कन्या
महाविद्यालय
सीहोर

धन्यवाद